अलंकारोंका महत्त्व

ग्रन्थमालाकी संयुक्त भूमिका

नौ गज साडी, माथेपर कुमकुम, साथमें अलंकारोंसे सजना, यही हिन्दू स्त्रीकी परम्परागत पहचान है । अलंकार हिन्दू संस्कृतिकी अनमोल धरोहर है । इस धरोहरको संजोए रखने हेतु कितनी ही पीढियोंसे साभिमान प्रयास हुए । समयके परिवर्तनके साथ हिन्दू संस्कृतिपर पश्चिमी संस्कृतिका रंग चढा । अलंकाररूपी धरोहरकी ओर अनदेखी होने लगी । 'फैशन'के नामपर आजकल स्त्रियां चूडियां नहीं पहनतीं एवं कुमकुमके स्थानपर बिन्दी लगाती हैं । कुछ स्त्रियोंको कंगन, नथ, बिछिया जैसे अलंकार पहनना पिछडापन लगता है ! इसके साथ ही लोगोंमें यह अनुचित भौतिकवादी धारणा बन गई है कि 'अलंकार ऐश्वर्यके प्रदर्शन योग्य वस्तु है ।' इस ग्रन्थमालाका मूल उद्देश्य यह अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण देना है कि 'अलंकार अर्थात दैवी कृपा-प्राप्तिमें सहायक साधन' ।

अलंकार पहननेसे ईश्वरीय शक्ति एवं चैतन्य प्राप्त होते हैं, शरीरकी काली (अनिष्ट) शक्ति घटकर अनिष्ट शक्तियोंसे हमारी रक्षा होती है, अलंकार पहने हुए अंगोंपर 'सूचीदाब (एक्यूप्रेशर)' उपचार होते हैं । अलंकारोंका यह महत्त्व बतानेवाले ऐसे अनेक अन्य ग्रन्थोंमें शास्त्रसहित स्पष्ट किए गए हैं । विभिन्न धातुओंसे बने अलंकारोंकी तुलना; स्त्रियों, पुरुषों एवं छोटे बच्चोंके अलंकार; अलंकारोंकी शुद्धि आदि विषयोंका शास्त्रोक्त विवेचन भी इसमें किया है । सामान्य व्यक्ति यह नहीं समझ सकता कि अलंकार पहननेसे सूक्ष्म स्तरपर वास्तवमें क्या घटित होता है । यह समझनेमें सक्षम सनातनके साधकोंद्वारा किए गए 'सूक्ष्म परीक्षण' एवं बनाए गए 'सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्र', इस ग्रन्थका एक अनोखापन है । सोनेकी सिकडी एवं अंगूठी, सात्त्विक एवं आसुरी अलंकार इत्यादि के सन्दर्भमें साधकोंद्वारा किए गए 'सूक्ष्मसम्बन्धी प्रयोग' सिखाते हैं कि अलंकारोंकी ओर आध्यात्मिक दृष्टिसे कैसे देखें ।

अलंकारोंसे अध्यात्मशास्त्रीय लाभ लेनेके लिए सभी अलंकार पहनना आवश्यक नहीं । अपनी आर्थिक स्थितिके अनुसार धर्मशास्त्रमें बताए अल्प अथवा अधिक अलंकार पहन सकते हैं; क्योंकि 'अलंकार कितने एवं कौनसे पहने हैं' इससे अधिक महत्त्वपूर्ण है, 'अलंकार किस भावसे पहने हैं' । जो सोनेके अलंकार नहीं पहन सकते वे सोनेका लेप चढाया हुआ अथवा चान्दीके अलंकार, अथवा उसके समतुल्य न्यूनतम एक अलंकार पहनें । ईश्वरप्राप्तिके लिए तथा साधनाकी दृष्टिसे नामजप, सत्सेवा आदि साधनामार्गोंद्वारा होनेवाले लाभकी तुलनामें अलंकारोंसे होनेवाला लाभ अत्यल्प है । ऐसेमें भी साधना न करनेवालोंके लिए अथवा प्राथमिक स्तरके साधकोंमें सात्त्विकता बढानेकी दृष्टिसे अलंकार एक वरदान है ।

श्री गुरुचरणोंमें यही प्रार्थना है कि ये ग्रन्थ पढकर अलंकारोंके विषयमें सभीमें आध्यात्मिक दृष्टिकोणकी निर्मिति हो एवं अलंकाररूपी अनमोल देन देनेवाले हिन्दू धर्मकी महानताका सभीको बोध हो ! – **संकलनकर्ता**

आचारधर्मका महत्त्व अंकित करनेवाला सनातनके ग्रन्थ !

स्नानपूर्व आचारोंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

- ब्रह्ममुहूर्तपर उठनेका क्या महत्त्व है ?
- उषाकालमें सोते क्यों नहीं रहना चाहिए ?
- ब्रशसे नहीं, उंगलीसे दंतधावन उचित क्यों ?
- झाडू कमरसे झुककर लगाना उचित क्यों ?

स्नानसे लेकर सांझतकके आचारोंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

- स्नान करते समय पीढेपर पालथी मारकर क्यों बैठें ?
- स्नानके समय श्लोकपाठ / नामजप क्यों करें ?

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण विषय '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

卐	**आध्यात्मिक परिभाषामें वैशिष्ट्यपूर्ण प्रस्तावना !**	९
卐	**ग्रन्थमालाकी संयुक्त भूमिका**	१०
卐	**अलंकार क्रय करते समय आवश्यक सावधानी**	१२
१.	'अलंकार' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ	१३
२.	अलंकारके कुछ समानार्थी शब्द	१३
३.	अलंकारोंकी निर्मिति	१३
४.	ईश्वरीय गुण अर्थात सूक्ष्म अलंकार	१४
५.	वैराग्यरूप अलंकार (ब्रह्मत्वकी ओर संकेत करनेवाले गुणरूप अलंकरण)	१६
६.	ब्रह्माण्डका अलंकार : शिवध्यान	१७
७.	देवता, मनुष्य एवं अलंकार	१८
	* कुछ अलंकार, उनमें कार्यरत तत्त्व एवं सम्बन्धित देवता	२२
	* देवताओंके अलंकार व मनुष्यके लिए उनका सम्भावित उपयोग	२२
८.	युगोंके अनुसार अलंकारोंमें हुए परिवर्तन	२४
९.	अलंकारोंकी विशेषताएं	२६
१०.	अलंकार धारण करनेका मूलभूत उद्देश्य एवं महत्त्व	२७
	* अलंकार धारण करनेसे देवताकी तरंगें ग्रहण कर पाना	२९
	* आरती उतारते समय अलंकारके उपयोगका महत्त्व	३२
	* आरती उतारते समय अलंकारके उपयोगका महत्त्व	३२

११. अलंकारकी धातु एवं उसमें जडे रत्न ४७

* अलंकारोंमें जडे विविध रत्नोंका शरीरपर अच्छा परिणाम होना ५२

卐 'अलंकारशास्त्र' विषयके सन्दर्भमें गहन ज्ञान ५५

卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ५६

आध्यात्मिक कष्टके निवारण हेतु सनातनके ग्रन्थ !

卐 नमक-राई, नारियल, फिटकरी आदि से कुदृष्टि कैसे उतारें ?

卐 कर्पूर, काली उडद, पानका पत्ता आदि से कुदृष्टि कैसे उतारें ?

卐 उतारा एवं मानस कुदृष्टि-निवारण

कर्मके माध्यमसे ईश्वरप्राप्तिका मार्ग दिखानेवाले सनातनके ग्रन्थ !

सकाम कर्म, निष्काम कर्म, कर्मफलत्याग एवं अकर्म कर्म

* सकाम कर्मकी विशेषताएं एवं महत्त्व क्या है ?
* फलकी आशा किए बिना कर्म क्यों करें ?
* निष्काम कर्मके फल क्यों नहीं भुगतने पडते ?

कर्म नामजप सहित करें !

पुण्य-पाप के प्रकार एवं उनके परिणाम

* निरन्तर साधना कर पुण्य क्यों और कैसे बढाएं ?
* 'पुण्यकर्म गुप्त रखें', ऐसा क्यों कहा गया है ?
* मनुष्यका स्वभाव पापी होनेके क्या कारण हैं ?
* मृत्युपरान्त पापानुसार कौनसे भोग भोगने पडते हैं ?

पुण्य : पाठशाला को दान